




Roze Ke Zaruri Masaail (Hindi)

(अमीरे अहले सुन्नत  की किताब
"फैजाने रमजान" से लिये गए मवाद की दूसरी किस्त)



रोज़े के जरूरी मसाइल

 रोज़ा बड़ी पुरानी इबादत है	02	 रोज़े से सिलहूत मिलती है	05
 रोज़ा किस पर फ़र्ज़ है	03	 ख़ूब डट कर खाने से बीमारियाँ पैदा होती हैं	07
 बच्चे को कब रोज़ा रखवाया जाए ?	04	 एक रोज़ा छोड़ने का नुक़सान	17

शेख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, वानिये रा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलास

मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी 



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह ﷻ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अहकामे रोज़ा

दुरुद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : हज़रते सय्यिदुना शैख़ अहमद बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفُور

जब फ़ौत हुए तो अहले शीराज़ में से किसी ने ख़्वाब में देखा कि सर पर मोतियों वाला ताज सजाए, बेहतरीन हुल्ला (या'नी जन्नती जोड़ा) ज़ैबे तन किये वोह शीराज़ की जामेअ मस्जिद की मेहराब में खड़े हैं। ख़्वाब देखने वाले ने हाल दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : “अल्लाह तअ़ाला ने मुझे बख़्शा, करम फ़रमाया और ताज पहना कर जन्नत में दाख़िल किया।” पूछा : किस सबब से ? फ़रमाया : “मैं ताजदारे मदीना ﷺ पर कसरत से दुरुदे पाक पढ़ा करता था येही अमल काम आ गया।”

(الْقَوْلُ الْبَينِع من ٢٠٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अल्लाह तबा-र-क व तअ़ाला का कितना बड़ा करम है कि उस ने हम पर माहे र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े फ़र्ज़ कर के हमारे लिये सामाने तक्वा फ़राहम किया। अल्लाह ﷻ पारह 2 सू-रतुल ब-करह की आयत नम्बर 183 ता 184 में इर्शाद फ़रमाता है :

لَا يَنْبَغُ

1 : फ़ैज़ाने सुन्नत में हर जगह मसाइल फ़िक्हे इ-नफ़ी के मुताबिक़ दिये गए हैं। लिहाज़ा शाफ़ेई, मालिकी और हम्बली इस्लामी भाई फ़िक्ही मसाइल के मुआ-मले में अपने अपने उ-लमाए किराम से रुजूअ करें।



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक न पड़े। (ترمذی)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ
عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٨٢﴾ أَيَّامًا
مَّعْدُودَاتٍ ۖ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ
فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ
طَعَامُ مَسْكِينٍ ۖ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرٌ فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ ۗ
وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٣﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो !
तुम पर रोज़े फ़र्ज किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज
हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेज़ ग़ारी मिले, गिनती के
दिन हैं तो तुम में जो कोई बीमार या सफ़र में हो
तो उतने रोज़े और दिनों में और जिन्हें इस की
ताक़त न हो वोह बदले में एक मिस्कीन का खाना
फिर जो अपनी तरफ़ से नेकी ज़ियादा करे तो वोह
उस के लिये बेहतर है और रोज़ा रखना तुम्हारे
लिये ज़ियादा भला है अगर तुम जानो।

रोज़ा बड़ी पुरानी इबादत है : आयते करीमा के इब्तिदाई हिस्से के तहत “तफ़सीरे
खाज़िन” में है : तुम से पहले लोगों से मुराद येह है : हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह
ﷺ तक जितने अम्बियाए
ﷺ से हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह
ﷺ तक जितने अम्बियाए
ﷺ किराम
ﷺ तशरीफ़ लाए और उन की उम्मतें आई उन पर रोज़े फ़र्ज होते चले आए
हैं (मगर उस की सूरत हमारे रोज़ों से मुख़लिफ़ थी)। मतलब येह है कि रोज़ा बड़ी पुरानी इबादत
है और गुज़स्ता उम्मतों में कोई उम्मत ऐसी नहीं गुज़री जिस पर अल्लाह ﷻ ने तुम्हारी तरह रोज़े
फ़र्ज न किये हों। (तफ़सीर ख़ाज़न ज १, ११९, مَلْخَصًا) और “तफ़सीरे अज़ीज़ी” में है : हज़रते सय्यिदुना
आदम सफ़िय्युल्लाह ﷺ पर हर महीने के अय्यामे बीज (या’नी चांद की 13,
14, 15 तारीख़) के तीन रोज़े फ़र्ज थे। और यहूद (या’नी हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह
ﷺ की कौम) पर यौमे आशूरा (या’नी 10 मुहर्रमुल ह़राम के दिन) और हर हफ़्ते
में हफ़्ते के दिन (Saturday) का और कुछ और दिनों के रोज़े फ़र्ज थे और नसारा पर माहे
र-मज़ान के रोज़े फ़र्ज थे।

(तफ़सीर अज़ीज़ी ज १, ११९)

रोज़े का मक्सद : मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ “तफ़सीरे सिरातुल जिनान” जिल्द



फरमाने मुस्फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

1 सफ़हा 290 पर है : “आयत के आखिर में बताया गया कि रोज़े का मक्सद तक्वा व परहेज़ गारी का हुसूल है। रोज़े में चूँकि नफ़्स पर सख़्ती की जाती है और खाने पीने की हलाल चीज़ों से भी रोक दिया जाता है तो इस से अपनी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पाने की मशक् (Practice) होती है जिस से ज़ब्त नफ़्स (नफ़्स पर क़ाबू) और हराम से बचने पर कुव्वत हासिल होती है और येही ज़ब्त नफ़्स और ख़्वाहिशात पर क़ाबू वोह बुन्यादी चीज़ है जिस के ज़रीए आदमी गुनाहों से रुकता है।”

रोज़ा किस पर फ़र्ज़ है : तौहीद व रिसालत का इक़्रार करने और तमाम ज़रूरिय्याते दीन पर ईमान लाने के बा’द जिस तरह हर मुसल्मान पर नमाज़ फ़र्ज़ क़रार दी गई है इसी तरह र-मज़ान शरीफ़ के रोज़े भी हर मुसल्मान (मर्द व औरत) अक़िल व बालिग़ पर फ़र्ज़ हैं। “दुरें मुख़्तार” में है : रोज़े 10 शा’बानुल मुअज़्ज़म 2 सि.हि. को फ़र्ज़ हुए। (ذُرِّمُخْتَار وَرَدُّ الْمُخْتَار ج 3 ص 383)

रोज़ा फ़र्ज़ होने की वजह : इस्लाम में अक्सर आ’माल किसी न किसी रूह परवर वाक़िए की याद ताज़ा करने के लिये मुक़र्रर किये गए हैं। म-सलन सफ़ा व मर्वह के दरमियान हाजियों की सअूय हज़रते सय्यि-दतुना हाजिरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہَا की यादगार है। आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने लख्ते जिगर हज़रते सय्यिदुना इस्माईल ज़बीहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلِیْہِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये पानी तलाश करने के लिये इन दोनों पहाड़ों के दरमियान सात बार चली और दौड़ी थीं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को हज़रते सय्यि-दतुना हाजिरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہَا की येह अदा पसन्द आ गई, लिहाज़ा इसी अदाए हाजिरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہَا को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बाक़ी रखते हुए हाजियों और उम्रह करने वालों के लिये सफ़ा व मर्वह की सअूय वाजिब फ़रमा दी। इसी तरह माहे र-मज़ानुल मुबारक में से कुछ दिन हमारे प्यारे सरकार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ारे हिरा में गुज़ारे थे, इस दौरान आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दिन को खाने से परहेज़ करते और रात को ज़िक्कुल्लाह عَزَّوَجَلَّ में मशगूल रहते थे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन दिनों की याद ताज़ा करने के लिये रोज़े फ़र्ज़ किये ताकि उस के महबूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत काइम रहे।



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (अबु सय्द)

“नबी” के तीन हुरूफ़ की निस्बत से अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के रोज़ों से मु-तअल्लिक 3 फ़रामीने मुस्तफ़ा ﷺ

﴿1﴾ (हज़रते) आदम सफ़िय्युल्लाह (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلِیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने (चांद की) 13, 14, 15

तारीख़ के रोज़े रखे । (کنز العمال ج ۸ ص ۲۰۸ حدیث ۲۴۱۸۸) ﴿2﴾

या'नी (हज़रते) नूह नजिय्युल्लाह (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلِیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा के इलावा हमेशा रोज़ा रखते थे । (ابن ماجہ ج ۲ ص ۲۳۳ حدیث ۱۷۱۴) ﴿3﴾

(हज़रते) दावूद (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلِیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखते थे । (مسلم ص ۵۸۴ حدیث ۱۱۵۹) और (हज़रते) सुलैमान (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلِیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) तीन दिन महीने के शुरूअ में, तीन दिन दरमियान में और तीन दिन आख़िर में (या'नी इस तरतीब से महीने में 9 दिन) रोज़ा रखा करते थे । और हज़रते ईसा रूहुल्लाह ﷺ हमेशा रोज़ा रखते थे कभी न छोड़ते थे । (ابن عساکر ج ۲ ص ۴۸)

रोज़ादार का ईमान कितना पुख़्ता है ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सख़्त गरमी है, प्यास से हल्क़ सूख रहा है, होंट खुश्क हो रहे हैं, पानी मौजूद है मगर रोज़ादार उस की तरफ़ देखता तक नहीं, खाना मौजूद है भूक की शिद्दत से हालत दिगर गूँ है मगर वोह खाने की तरफ़ हाथ तक नहीं बढ़ाता । आप अन्दाज़ा फ़रमाइये ! इस मुसलमान का खुदाए रहमान عَزَّوَجَلَّ पर कितना पुख़्ता ईमान है क्यूं कि वोह जानता है कि इस की ह-र-कत सारी दुन्या से तो छुप सकती है मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से पोशीदा नहीं रह सकती । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर इस का येह यक़ीने कामिल रोज़े का अ-मली नतीजा है, क्यूं कि दूसरी इबादतें किसी न किसी ज़हिरी ह-र-कत से अदा की जाती हैं मगर रोज़े का तअल्लुक़ बातिन से है, इस का हाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता अगर वोह छुप कर खा पी ले तब भी लोग तो येही समझते रहेंगे कि येह रोज़ादार है, मगर महज़ ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ के बाइस वोह खाने पीने से अपने आप को बचा रहा है ।

बच्चे को कब रोज़ा रखवाया जाए ? : मेरे आका आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : “बच्चा



फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مجمع الزوائد)

जैसे ही आठवें साल में क़दम रखे (उस के) वली (या'नी सर परस्त) पर लाज़िम है कि उसे नमाज़ रोज़े का हुक्म दे और जब ग्यारहवां साल शुरू हो तो वली (या'नी सर परस्त) पर वाज़िब है कि सौमो सलात (नमाज़ न पढ़ने और रोज़ा न रखने) पर मारे बशर्ते कि रोज़े की ताक़त हो और रोज़ा ज़रर (या'नी नुक़सान) न करे ।” (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 345) फ़ु-क़हाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى फ़रमाते हैं : बच्चे की उम्र दस साल की हो जाए और (ग्यारहवें में क़दम रख दे और) उस में रोज़ा रखने की ताक़त हो तो उस से र-मज़ानुल मुबारक में रोज़ा रखवाया जाए । अगर पूरी ताक़त होने के बा वुजूद न रखे तो मार कर रखवाइये अगर रख कर तोड़ दिया तो क़ज़ा का हुक्म न देंगे और नमाज़ तोड़ दे तो फिर पढ़ाइये । (رَدُّ الْمُحْتَار ج 3 ص 442)

आ 'ला हज़रत को वालिद साहिब ने ख़्वाब में फ़रमाया (ह़िकायत) : “मलफूज़ाते आ 'ला हज़रत” सफ़हा 206 पर मेरे आका आ 'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अपना ख़्वाब इर्शाद फ़रमाते हैं : अभी चन्द साल हुए माहे रजब में हज़रत वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और मुझ से फ़रमाया : “अब की र-मज़ान में मरज़ शदीद होगा रोज़ा न छोड़ना ।” वैसा ही हुवा और हर चन्द तबीब वग़ैरा ने कहा (मगर) मैं ने بِحَمْدِ اللَّهِ تَعَالَى रोज़ा न छोड़ा और इसी की ब-र-कत ने بِفَضْلِهِ تَعَالَى शिफ़ा दी कि ह़दीस में इर्शाद हुवा है : **صُومُوا تَصِحُّوا** या'नी रोज़ा रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे । (مُعْجَم أَوْسَط ج 6 ص 147 حديث 8312)

रोज़े से सिद्दहत मिलती है : अमीरुल मुअमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, अलिय्युल मुर्तज़ा शोरे खुदा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم से मरवी है, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक्बूल, सय्यिदह आमिना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के गुलशन के महक्ते फूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने सिद्दहत निशान है : “बेशक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने बनी इसराईल के एक नबी عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ वह्य फ़रमाई कि आप अपनी क़ौम को ख़बर दीजिये कि जो भी बन्दा मेरी रिज़ा के लिये एक दिन का रोज़ा रखता है तो मैं उस के जिस्म को सिद्दहत भी इनायत फ़रमाता हूँ और उस को अज़ीम अज़्र भी दूंगा ।” (شُعَبُ الْإِيمَان ج 3 ص 412 حديث 3923)



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

मे'दे का वरम : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ** अहादीसे मुबा-रका से मुस्तफ़ाद हुवा कि रोज़ा अन्नो सवाब के साथ साथ हुसूले सिद्दहत का भी ज़रीआ है। अब तो साइन्स दान भी अपनी तहक़ीक़ात में इस हक़ीक़त को तस्लीम करने लगे हैं। जैसा कि ओक्सफ़ोर्ड यूनीवर्सिटी का प्रोफ़ेसर मूर पोलिड (MOORE PALID) कहता है : "मैं इस्लामी उलूम पढ़ रहा था जब रोज़ों के बारे में पढ़ा तो उछल पड़ा कि इस्लाम ने अपने मानने वालों को कैसा अज़ीमुश्शान नुस्खा दिया है ! मुझे भी शौक़ हुवा, लिहाज़ा मैं ने मुसल्मानों की तर्ज़ पर रोज़े रखने शुरूअ कर दिये। अर्साए दराज़ से मेरे मे'दे पर वरम था, कुछ ही दिनों के बा'द मुझे तक्लीफ़ में कमी महसूस हुई, मैं रोज़े रखता रहा यहां तक कि एक महीने में मेरा मरज़ बिल्कुल ख़त्म हो गया !"

हैरत अंगेज़ इन्किशाफ़ात : होलेन्ड का पादरी एल्फ़ गाल (ALF GAAL) कहता है : मैं ने शूगर, दिल और मे'दे के मरीज़ों को मुसल्सल 30 दिन रोज़े रखवाए, नतीजतन शूगर वालों की शूगर कन्ट्रोल हो गई, दिल के मरीज़ों की घबराहट और सांस का फूलना कम हुवा और मे'दे के मरीज़ों को सब से ज़ियादा फ़ाएदा हुवा। एक अंग्रेज़ माहिरे नफ़िसयात सिग्मन्ड फ़्राइड (Sigmund Freud) का बयान है, रोज़े से जिस्मानी खिचाव, ज़ेहनी डिप्रेसन और नफ़िसयाती अमराज़ का ख़ातिमा होता है।

डॉक्टरों की तहक़ीक़ाती टीम : एक अख़बारी रिपोर्ट के मुताबिक़ जर्मनी, इंग्लेन्ड और अमरीका के माहिर डॉक्टरों की तहक़ीक़ाती टीम र-मज़ानुल मुबारक में पाकिस्तान आई और उन्होंने ने बाबुल मदीना कराची, मर्कजुल औलिया लाहोर और दियारे मुहद्दिसे आ'ज़म **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرُ** सरदारआबाद (फ़ैसलआबाद पंजाब पाकिस्तान) का इन्तिखाब किया। जाएज़ा (Survey) के बा'द उन्होंने ने येह रिपोर्ट पेश की : चूँकि मुसल्मान नमाज़ पढ़ते और र-मज़ानुल मुबारक में इस की ज़ियादा पाबन्दी करते हैं इस लिये वुजू करने से नाक, कान और गले के अमराज़ में कमी वाक़ेअ हो जाती है, नीज़ मुसल्मान रोज़े के बाइस कम खाते हैं लिहाज़ा मे'दे, जिगर, दिल और आ'साब (या'नी पठ्ठों) के अमराज़ में कम मुब्तला होते हैं।



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा । (جمع الجوامع)

ख़ूब डट कर खाने से बीमारियां पैदा होती हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फी नफ़्सही रोज़े से कोई बीमार नहीं होता बल्कि स-हरी व इफ़्तारी में बे एहतिyतियों और बद परहेज़ियों के सबब नीज़ दोनों वक़्त ख़ूब मुरग़्गन (या'नी तेल, घी वाली) और तली हुई गिज़ाओं के इस्ति'माल और रात भर वक़्तन फ़ वक़्तन खाते पीते रहने से रोज़ादार बीमार हो जाता है, लिहाज़ा स-हरी और इफ़्तार के वक़्त खाने पीने में एहतिyत बरतनी चाहिये, रात के दौरान पेट में गिज़ा का इतना ज़ियादा भी ज़खीरा न कर लिया जाए कि दिन भर डकारें आती रहें और रोज़े में भूक प्यास का एहसास ही न रहे, अगर भूक प्यास का एहसास ही न रहा तो फिर रोज़े का लुत्फ़ ही क्या है ! देखा जाए तो एक तरह से रोज़े का मज़ा ही इस बात में है कि सख़्त गरमी हो, शिदते प्यास से लब सूख गए हों और भूक से ख़ूब निढाल हो चुके हों ऐसे में काश ! **मदीनए मुनव्वरह** **زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** की मीठी मीठी गरमी और ठन्डी ठन्डी धूप की याद ताज़ा हो और ऐ काश ! करबला के तपते हुए सहरा और गुलिस्ताने नुबुव्वत के महक्ते हुए नौ शिगुफ़्ता फूलों, तीन दिन की भूक प्यास से तड़पते बिलक्ते "हकीकी म-दनी मुन्नों" और शहन्शाहे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के भूके प्यासे मज़्लूम शहज़ादों की याद तड़पाने लगे, और जिस वक़्त भूक प्यास कुछ ज़ियादा ही सताए उस वक़्त तस्लीमो रिज़ा के पैकर, मदीने के ताजवर, नबियों के सरवर, महबूबे दावर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के शि-कमे अत्हर पर बंधे हुए बा मुक़द्दर पथ्थर भी याद आ जाएं तो क्या कहने ! लिहाज़ा मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई रोज़े तो ऐसे होने चाहिएं कि हम अपने आकाओं और सरकारों की हसीन यादों में गुम हो जाएं ।

कैसे आकाओं का हूं बन्दा रज़ा

बोलबाले मेरी सरकारों के

(हदाइके बख़्शिश शरीफ़, स. 360)

बिगैर ओपरेशन के विलादत हो गई : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रोज़े की नूरानिय्यत और रूहानिय्यत पाने और म-दनी ज़ेहन बनाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس کے پاس میرا جिकر ہوا اور اس نے मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया । (طبرانی)

गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये और सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काफ़िलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआदत हासिल कीजिये । **سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** ! दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल, सुन्नतों भरे इज्तिमाआत और म-दनी काफ़िलों की भी क्या ख़ूब म-दनी बहारें और ब-र-कतें हैं ! ग़ालिबन 1998 सि.ई. का वाकिआ है, हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई की अहलिया उम्मीद से थीं, दिन भी "पूरे" हो गए थे, डॉक्टर का कहना था कि शायद ओपरेशन करना पड़ेगा । तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी का बैनल अक्वामी तीन रोज़ा सुन्नतों भरा इज्तिमाअ (सहराए मदीना, मुलतान) का वक़्त करीब था । इज्तिमाअ के बा'द सुन्नतों की तरबियत के एक माह के म-दनी काफ़िले में आशिकाने रसूल के हमराह सफ़र की उन इस्लामी भाई की निय्यत थी । इज्तिमाअ में हाज़िरी के लिये रवानगी के वक़्त, सामाने काफ़िला साथ ले कर अस्पताल पहुंचे, चूंकि ख़ानदान के दीगर अपराद तआवुन के लिये मौजूद थे, अहलियए मोह-त-रमा ने अशकबार आंखों से उन्हें सुन्नतों भरे इज्तिमाअ (मुलतान) के लिये अल वदाअ किया । उन का ज़ेहन येह बना हुआ था कि अब तो बैनल अक्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ और फिर वहां से एक माह के म-दनी काफ़िले में ज़रूर सफ़र करना है कि काश ! इस की ब-र-कत से अफ़िय्यत के साथ विलादत हो जाए । बेचारे ग़रीब थे, उन के पास तो ओपरेशन के अख़्राजात भी नहीं थे ! बहर हाल वोह मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ हाज़िर हो गए । सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में ख़ूब दुआएं मांगीं । इज्तिमाअ की इख़ितामी रिक्कत अंगेज़ दुआ के बा'द उन्होंने ने घर पर फ़ोन किया तो उन की अम्मीजान ने फ़रमाया : मुबारक हो ! गुज़श्ता रात रब्बे का एनात **عَزَّوَجَلَّ** ने बिगैर ओपरेशन के तुम्हें चांद सी म-दनी मुन्नी अता फ़रमाई है । उन्होंने खुशी से झूमते हुए अर्ज़ की : अम्मीजान ! मेरे लिये क्या हुक्म है ? आ जाऊं या एक माह के लिये म-दनी काफ़िले का मुसाफ़िर बनूं ? अम्मीजान ने फ़रमाया : "बेटा ! बे फ़िक्र हो कर म-दनी काफ़िले में सफ़र करो ।" अपनी म-दनी मुन्नी की ज़ियारत की हसरत दिल में दबाए



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلیٰ)

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ ﷻ वोह एक माह के म-दनी क़ाफ़िले में अशिक़ाने रसूल के साथ रवाना हो गए।
 وَالْحَمْدُ لِلَّهِ ﷻ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की ब-र-कत से उन की मुशिकल आसान हो गई थी। म-दनी क़ाफ़िलों की म-दनी बहारों की ब-र-कत के सबब घर वालों का बहुत ज़बर दस्त म-दनी ज़ेहन बन गया, उन इस्लामी भाई का बयान है कि मेरे बच्चों की अम्मी का कहना है : जब आप म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर होते हैं मैं बच्चों समेत अपने आप को महफूज़ तसव्वुर करती हूँ।

ज़च्चा की ख़ैर हो, बच्चा बिलख़ैर हो

उठिये हिम्मत करें, क़ाफ़िले में चलो

बीवी बच्चे सभी, ख़ूब पाएं ख़ुशी

ख़ैरियत से रहें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 674, 675)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

रोज़े की जज़ा : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रहमते आ-लमिय्यान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : “आदमी के हर नेक काम का बदला दस से सात सो गुना तक दिया जाता है, अल्लाह ﷻ ने फ़रमाया : إِلَّا الصَّوْمَ فَإِنَّهُ لِي وَأَنَا أَجْزَى بِهِ- या’नी सिवाए रोज़े के कि रोज़ा मेरे लिये है और इस की जज़ा मैं खुद दूंगा। अल्लाह ﷻ का मज़ीद इर्शाद है : बन्दा अपनी ख़्वाहिश और खाने को सिर्फ़ मेरी वजह से तर्क करता है। रोज़ादार के लिये दो ख़ुशियां हैं, एक इफ़्तार के वक़्त और एक अपने रब ﷻ से मुलाक़ात के वक़्त, रोज़ादार के मुंह की बू अल्लाह ﷻ के नज़्दीक मुश्क से ज़ियादा पाकीज़ा है।”

(مسلم ص ५८० حديث ११०१)

मज़ीद इर्शाद है : रोज़ा सिपर (या’नी ढाल) है और जब किसी के रोज़े का दिन हो तो न बेहूदा बके और न ही चीखे, फिर अगर कोई और शख्स इस से गालम गलोच करे या लड़ने पर आमदा हो तो कह दे : “मैं रोज़ादार हूँ।”

(بخاری ج ۱ ص ۶۲۴ حديث ۱۸۹۴)

रोज़े का ख़ुसूसी इन्शाम : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा अहादीसे मुबा-रका



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पड़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (सुन्द अहद)

में रोज़े की कई खुसूसिय्यात इर्शाद फ़रमाई गई हैं। कितनी प्यारी बिशारत है उस रोज़ादार के लिये जिस ने इस तरह रोज़ा रखा जिस तरह रोज़ा रखने का हक़ है। या'नी खाने पीने और जिमाअ से बचने के साथ साथ अपने तमाम आ'ज़ा को भी गुनाहों से बाज़ रखा तो वोह रोज़ा अल्लाह ﷻ के फ़ज़्लो करम से उस के लिये तमाम पिछले गुनाहों का कफ़फ़ारा हो गया। और हदीसे मुबारक का येह फ़रमाने आलीशान तो ख़ास तौर पर क़ाबिले तवज्जोह है जैसा कि सरकारे नामदार ﷺ अपने परवर दगार ﷻ का फ़रमाने खुश गवार सुनाते हैं : "فَإِنَّ لِي وَأَنَا أَجْزَى بِهِ" या'नी रोज़ा मेरे लिये है और इस की जज़ा मैं खुद ही दूंगा। हदीसे कुदसी के इस इर्शादे पाक को बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام ने "أَنَا أَجْزَى بِهِ" भी पढ़ा है जैसा कि मिरआतुल मनाजीह वग़ैरा में है तो फिर मा'ना येह होंगे : "रोज़े की जज़ा मैं खुद ही हूँ।" سُبْحَانَ اللَّهِ ﷻ ! या'नी रोज़ा रख कर रोज़ादार बज़ाते खुद अल्लाह तबा-र-क व तआला ही को पा लेता है।

नेक आ'माल की जज़ा जन्नत है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुरआने करीम में मुख़लिफ़ मक़ामात पर बयान हुवा है कि जो अच्छे आ'माल करेगा उसे जन्नत मिलेगी। चुनान्चे अल्लाह तबा-र-क व तआला पारह 30 सू-रतुल बय्यिनह की आयत नम्बर 7 और 8 में इर्शाद फ़रमाता है :

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۖ جَزَاءُ لَهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोही तमाम मख़लूक में बेहतर हैं। उन का सिला उन के रब के पास बसने के बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बहें, उन में हमेशा हमेशा रहें। अल्लाह उन से राज़ी और वोह उस से राज़ी। येह उस के लिये है जो अपने रब से डरे।



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुँचता है। (طبرانی)

ग़ैरे सहाबी के लिये “رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ” कहना कैसा ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यह बात बिल्कुल ग़लत है कि “رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ” कहना लिखना सिर्फ़ सहाबी के नाम के साथ मख़सूस है। पेश कर्दा आयात के इस आखिरी हिस्से ① رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَاضُوا عَنْهُ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ (तर-ज-मए कन्जुल ईमान : अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) उन से राज़ी और वोह उस से राज़ी, यह उस के लिये है जो अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) से डरे) ने इस अवामी ग़लत फ़हमी को जड़ से उखाड़ दिया ! ख़ौफ़े खुदा रखने वाले हर मोमिन ख़्वाह वोह सहाबी हो या ग़ैरे सहाबी सब के लिये येह बिशारते उज़्मा इर्शाद फ़रमाई गई है कि जो भी अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) से डरने वाला है वोह رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَاضُوا عَنْهُ के जुम्मे में दाख़िल है, बेशक हर सहाबी और वली के लिये “رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ” लिखना और बोलना बिल्कुल दुरुस्त व जाइज़ है। जिस ने ईमान के साथ सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की हयाते ज़ाहिरी में सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की एक लम्हा भर भी सोहबत पाई या देखा और उस का ईमान पर ख़ातिमा हुवा वोह सहाबी है। बड़े से बड़ा वली, सहाबी के मर्तबे को नहीं पा सकता, हर सहाबी आदिल और जन्नती है।

मुझे मोतियों वाला चाहिये : اَلْحَسْبُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ “رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ” की बात भी ज़िम्नन ज़ेरे बहूस आ गई, अब अस्ल मौजूअ पर आते हैं : नमाज़, हज़, ज़कात, गु-रबा की इमदाद, बीमारों की इयादत, मसाकीन की ख़बरगीरी वग़ैरा तमाम आ'माले ख़ैर से जन्नत मिलती है, मगर रोज़ा वोह इबादत है जिस से जन्नत वाला या'नी खुद मालिके हकीकी (عَزَّوَجَلَّ) ही मिल जाता है। कहते हैं : एक मर्तबा महमूद ग़ज़नवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي के कुछ कीमती मोती अपने अफ़सरान के सामने बिखर गए, फ़रमाया : “चुन लीजिये !” और खुद आगे चल दिये। थोड़ी दूर जाने के बा'द मुड़ कर देखा तो अयाज़ घोड़े पर सुवार पीछे चला आ रहा है। पूछा : अयाज़ ! क्या तुझे मोती नहीं चाहिएं ? अयाज़ ने अर्ज़ की : “आलीजाह ! जो मोतियों के तालिब थे वोह मोती चुन रहे हैं, मुझे तो मोती नहीं बल्कि मोतियों वाला चाहिये।”

(بوستان سعدی ص ۱۰ اُلْمُخَصَّصًا)



फ़रमाने मुस्त्फ़ा ﷺ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुदरि से उठे। (شعب الایمان)

(ﷺ) के

जन्नत रसूलुल्लाह (ﷺ) की

इस सिलसिले में एक हदीसे मुबारक भी मुला-हज़ा फ़रमाइये, हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन का'ब अस्लमी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं रात हुज़ूर, सरापा नूर, फैज़ गन्ज़ूर, शाहे गयूर ﷺ की ख़िदमत में गुज़ारता था तो मैं आप ﷺ के पास वुज़ू का पानी और आप की ज़रूरत की चीज़ें (जैसे मिस्वाक) ले कर हाज़िर हुवा तो रहूमतुल्लिल आ-लमीन ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : **سَلْ** ! या'नी मांग क्या मांगता है ? मैं ने अर्ज़ की : **أَسْأَلُكَ مِرَافَقَتَكَ فِي الْجَنَّةِ** या'नी सरकार ﷺ ! जन्नत में आप की रफ़ाक़त (या'नी पड़ोस) चाहिये। (गोया अर्ज़ कर रहे हैं :)

तुझ से तुझी को मांग लूं तो सब कुछ मिल जाए

सो सुवालों से येही एक सुवाल अच्छा है

(दरियाए रहमत मजीद जोश में आया) और फ़रमाया : **أَوْ غَيْرَ ذَلِكَ؟** या'नी कुछ और मांगना है ? मैं ने अर्ज़ की : “बस सिर्फ़ येही।”

तुझ से तुझी को मांग कर मांग ली सारी काएनात

मुझ सा कोई गदा नहीं, तुझ सा कोई सख़ी नहीं

(जब हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन का'ब अस्लमी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जन्नत की रफ़ाक़त (पड़ोस) त़लब कर चुके और मजीद किसी हाज़त के त़लब करने से इन्कार कर दिया) तो इस पर सरकारे नामदार, बि इज़्ने परवर दगार दो आलम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार ﷺ ने फ़रमाया : **فَاعِنِّي عَلَى نَفْسِكَ بِكَثْرَةِ السُّجُودِ** या'नी अपने नफ़्स पर कस्ते सुजूद (या'नी ज़ियादा नवाफ़िल) से मेरी मदद कर।

(مسلم ص २०३ حديث ४८९)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! ﷺ



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

जो चाहो मांग लो ! : سُبْحَنَ اللَّهِ ! سُبْحَنَ اللَّهِ ! سُبْحَنَ اللَّهِ ! इस हदीसे मुबारक ने तो ईमान ही ताज़ा कर दिया। हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फरमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का बिला किसी तक्वीद व तख़सीस मुत्लक़न फरमाना : **سَلْ؟** या'नी मांग क्या मांगता है ? इस बात को ज़ाहिर करता है कि सारे ही मुआ-मलात सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के मुबारक हाथ में हैं, जो चाहें जिस को चाहें अपने रब **عَزَّوَجَلَّ** के हुक्म से अता कर दें। अल्लामा बूसीरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ क़सीदए बुर्दा शरीफ़ में फरमाते हैं :

فَإِنَّ مِنْ جُودِكَ الذَّنْبُ أَوْضَرَتْهَا وَمِنْ عُلُومِكَ عِلْمُ اللُّوحِ وَالْقَلَمِ

या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! दुनिया और आख़िरत आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ही के जूदो सखावत का हिस्सा है और लौहो क़लम का इल्म तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के इल्मो मुबा-रका का एक हिस्सा है।

اگر خیریت دُنیا و عُنْجی آرزو داری
بَدْرگَاش بِنیادِ بَرِ چِه مَن خَوَایِ تَمَنّا کُن

या'नी दुनिया व आख़िरत की ख़ैर चाहते हो तो इस आस्ताने अर्श निशान पर आओ और जो चाहो मांग लो !

(أَشْعَةُ اللَّسْعَاتِ ج ١ ص ٤٢٤ ٤٢٥ وغيره)

ख़ालिके कुल ने आप को मालिके कुल बना दिया

दोनों जहान दे दिये क़ब्ज़ा व इख़्तियार में

“२-मजानुल करीम” के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से

रोज़े के फ़ज़ाइल से मु-तअल्लिक़ **11** फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **जन्नती दरवाज़ा : 1** बेशक जन्नत में एक दरवाज़ा है जिस को रय्यान कहा जाता है, इस से क़ियामत के दिन रोज़ादार दाख़िल होंगे इन के इलावा कोई और दाख़िल न होगा। कहा जाएगा : रोज़ेदार कहां हैं ? पस येह लोग खड़े होंगे इन के इलावा कोई और इस दरवाज़े से दाख़िल न होगा। जब येह



فرمانه مستفاد : صَلَّاهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : مُلَّا عَلَى دُرُودِ شَرِيفِ پَدُو، اَللّٰهُمَّ تُمَّ عَلَى رَحْمَتِ بَهْجَةِ اِ (ابن عدی)

दाख़िल हो जाएंगे तो दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा पस फिर कोई इस दरवाज़े से दाख़िल न होगा ।

(بخاری ج ۱ ص ۶۲۰ حدیث ۱۸۹۶)

साबिका गुनाहों का कफ़ारा : ﴿2﴾ जिस ने र-मज़ान का रोज़ा रखा और उस की हुदूद को पहचाना और जिस चीज़ से बचना चाहिये उस से बचा तो जो (कुछ गुनाह) पहले कर चुका है उस का कफ़ारा हो गया ।

(الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ج ۵ ص ۱۸۳ حدیث ۳۴۲۴)

जहन्नम से 70 साल की मसाफ़त दूर : ﴿3﴾ जिस ने अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की राह में एक दिन का रोज़ा रखा अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** उस के चेहरे को जहन्नम से सत्तर साल की मसाफ़त दूर कर देगा ।

(بخاری ج ۲ ص ۲۶۰ حدیث ۲۸۴۰)

एक रोज़े की फ़ज़ीलत : ﴿4﴾ जिस ने एक दिन का रोज़ा अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की रिज़ा हासिल करने के लिये रखा, अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना कि एक कव्वा जो अपने बचपन से उड़ना शुरू करे यहां तक कि बूढ़ा हो कर मर जाए ।

(ابو یعلی ج ۱ ص ۳۸۳ حدیث ۹۱۷)

सुख़ याकूत का मकान : ﴿5﴾ जिस ने माहे र-मज़ान का एक रोज़ा भी ख़ामोशी और सुकून से रखा उस के लिये जन्नत में एक घर सब्ज़ ज़बर-जद या सुख़ याकूत का बनाया जाएगा ।

(مُعْجَم أَوْسَط ج ۱ ص ۳۷۹ حدیث ۱۷۶۸)

जिस्म की ज़कात : ﴿6﴾ हर शै के लिये ज़कात है और जिस्म की ज़कात रोज़ा है और रोज़ा आधा सत्र है ।

(ابن ماجه ج ۲ ص ۳۴۷ حدیث ۱۷۴۰)

सोना भी इबादत है : ﴿7﴾ रोज़ादार का सोना इबादत और इस की ख़ामोशी तस्बीह करना और इस की दुआ क़बूल और इस का अमल मक्बूल होता है ।

(شُعَبُ الْاِيْمَان ج ۳ ص ۴۱۰ حدیث ۳۹۳۸)

आ'ज़ा का तस्बीह करना : ﴿8﴾ जो बन्दा रोज़े की हालत में सुब्ह करता है, उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उस के आ'ज़ा तस्बीह करते हैं और आस्माने दुन्या पर रहने वाले (फ़रिश्ते) उस के लिये सूरज डूबने तक मग़ि़रत की दुआ करते रहते हैं । अगर वोह एक या दो रक़अतें पढ़ता है तो येह आस्मानों में उस के लिये नूर बन जाती हैं और हूरे ईन (या'नी बड़ी आंखों वाली



फरमाने मुस्त्फा ﷺ : मुज़ पर कसरत से दुरुदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुरुदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मफ़िरत है। (ابن عساکر)

हूँ) में से उस की बीवियां कहती हैं : ऐ अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! तू इस को हमारे पास भेज दे हम इस के दीदार की बहुत ज़ियादा मुश्ताक हैं। और अगर वोह **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** या **سُبْحَنَ اللَّهِ** या **اللَّهُ أَكْبَرُ** पढ़ता है तो सत्तर हजार फ़िरिश्ते उस का सवाब सूरज डूबने तक लिखते रहते हैं। (ایضاً ص ۲۹۹ حدیث ۳۵۹۱)

जन्नती फल : ﴿9﴾ जिस को रोज़े ने खाने या पीने से रोक दिया कि जिस की उसे ख़्वाहिश थी तो अल्लाह तआला उसे जन्नती फलों से खिलाएगा और जन्नती शराब से सैराब करेगा। (ایضاً ص ۴۱۰ حدیث ۳۹۱۷)

सोने का दस्तर ख़्वान : ﴿10﴾ क़ियामत वाले दिन रोज़ादारों के लिये एक सोने का दस्तर ख़्वान रखा जाएगा, जिस से वोह खाएंगे हालां कि लोग (हिसाब किताब के) मुन्तज़िर होंगे। (كَتَبَ الْقَمَال ج ۸ ص ۲۱۴ حدیث ۲۳۶۴۰)

सात किस्म के आ'माल : ﴿11﴾ “अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के नज़्दीक आ'माल सात किस्म पर हैं, दो अमल वाजिब करने वाले, दो अमलों की जज़ा उन की मिस्ल, एक अमल की जज़ा अपने से दस गुना, एक अमल की सात सो गुना तक और एक अमल ऐसा है कि उस का सवाब अल्लाह तआला के इलावा कोई नहीं जानता। पस जो दो वाजिब करने वाले हैं ﴿1﴾ वोह शख्स जो अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** से इस हाल में मिला कि अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की इबादत इख़लास के साथ इस तरह की, कि किसी को उस का शरीक न ठहराया तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई ﴿2﴾ और जो अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** से इस हाल में मिला कि उस के साथ किसी को शरीक ठहराया तो उस के लिये दोज़ख़ वाजिब हो गई। और जिस ने एक गुनाह किया तो उस की मिस्ल (या'नी एक ही गुनाह की) जज़ा पाएगा और जिस ने सिर्फ़ नेकी का इरादा किया तो एक नेकी की जज़ा पाएगा। और जिस ने नेकी कर ली तो वोह दस (नेकियों का अन्न) पाएगा और जिस ने अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की राह में अपना माल खर्च किया तो उस के खर्च किये हुए एक दिरहम को सात सो दिरहम और एक दीनार को सात सो दीनार में बढ़ा दिया जाएगा और रोज़ा अल्लाह तआला के लिये है इस के रखने वाले का सवाब अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के इलावा कोई नहीं जानता।”

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ۳ ص ۲۹۸ حدیث ۳۵۸۹)



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बख्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस का ईमान पर खातिमा होगा वोह या तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

की रहमत से बे हिसाब या **مَعَادُ اللَّهِ** عَزَّوَجَلَّ गुनाहों का अज़ाब हुवा तब भी बिल आखिर यकीनन दाखिले जन्नत होगा। और जिस का (**مَعَادُ اللَّهِ** عَزَّوَجَلَّ) खातिमा कुफ़्र पर हुवा वोह हमेशा हमेशा दोज़ख में रहेगा। जिस ने एक गुनाह किया उस को एक ही गुनाह का बदला मिलेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत के कुरबान ! सिर्फ़ नेकी की निय्यत करने पर एक नेकी का सवाब और अगर नेकी कर ली तो सवाब दस गुना, राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में खर्च करने वाले को सात सो गुना और रोज़ादार की भी कितनी ज़बर दस्त अ-जमत है कि इस के सवाब को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता।

बे हिसाब अज़्र : हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहूबार **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं : “बरोजे क़ियामत एक मुनादी इस तरह निदा करेगा, हर बोने वाले (या'नी अमल करने वाले) को उस की खेती (या'नी अमल) के बराबर अज़्र दिया जाएगा सिवाए कुरआन वालों (या'नी आलिमे कुरआन) और रोज़ादारों के कि इन्हें बे हदो **बे हिसाब अज़्र** दिया जाएगा।” (شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ١٣٤ حديث ٣٩٢٨)

यरक़ान से सिद्दहत मिल गई : रोज़ों की ब-र-कतों को दोबाला करने और अपने बातिन में इल्मे दीन से उजाला करने के लिये तब्तीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल को अपना लीजिये। अपनी इस्लाह की खातिर मक-त-बतुल मदीना से म-दनी इन्आमात का रिसाला ले कर पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये और सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करना अपना मा'मूल बनाइये, म-दनी क़ाफ़िले की भी क्या ख़ूब म-दनी बहारें हैं ! 1994 सि.ई. की बात है, ज़मज़म नगर (हैदरआबाद, बाबुल इस्लाम सिन्ध, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बच्चों की अम्मी का यरक़ान काफ़ी बढ़ चुका था और वोह बाबुल मदीना कराची के अन्दर अपने मयके में जेरे इलाज थीं। उन इस्लामी भाई ने 63 दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र इख़्तियार



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ) गा। (अबु शकुल)

किया और इस ज़िम्न में बाबुल मदीना कराची तशरीफ़ लाए, फ़ोन पर घर पर राबिता किया, तबीअत काफ़ी तश्वीश नाक थी, बिलोरबिन (Billirubin) तश्वीश नाक हृद तक बढ़ चुका था तक्रीबन 25 ग्लूकोज़ की ड्रिपें लगाने के बा वुजूद खातिर ख़्वाह फ़ाएदा न हुवा था। इन्होंने ने उन को तसल्ली देते हुए कहा : **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं म-दनी काफ़िले का मुसाफ़िर हूँ, आशिक़ाने रसूल की सोहबतें मुयस्सर हैं, **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** म-दनी काफ़िले की ब-र-कत से सब बेहतर हो जाएगा। इस के बा'द भी उन्होंने ने बराबर राबिता रखा, **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** रोज़ बरोज़ सिद्दहत बेहतर होती जा रही थी। पांचवें दिन बाबुल मदीना से आगे सफ़र दरपेश था, उन्होंने ने जब फ़ोन किया तो उन्हें येह ख़बरे फ़रहत असर सुनने को मिली : **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** बिलोरबिन की रिपोर्ट नोर्मल आ गई है और डॉक्टर ने इत्मीनान का इज़हार किया है। अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र अदा करते हुए वोह खुशी खुशी आशिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी काफ़िले में मज़ीद आगे सफ़र पर ख़वाना हो गए।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب ! صَلَّيْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहां रोज़ा रखने के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं वहीं बिगैर किसी सहीह मजबूरी के र-मज़ानुल मुबारक का रोज़ा तर्क करने पर सख़्त वईदें भी हैं। र-मज़ान शरीफ़ का एक भी रोज़ा जो बिला किसी उज़्रे शर-ई जान बूझ कर जाएअ कर दे तो अब उम्र भर भी अगर रोज़े रखता रहे तब भी उस छोड़े हुए एक रोज़े की फ़ज़ीलत नहीं पा सकता। चुनान्चे **एक रोज़ा छोड़ने का नुक़्सान** : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** से रिवायत है, सरकारे वाला तबार, बि इज़्ने परवर दगार दो जहां के मालिको मुख़्तार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमान है : “जिस ने र-मज़ान के एक दिन का रोज़ा बिगैर रुख़्सत व बिगैर मरज़ इफ़तार किया (या'नी न रखा) तो ज़माने भर का रोज़ा भी उस की क़ज़ा नहीं हो सकता अगर्चे बा'द में रख भी ले।” **(तिर्मिज़ी ज २, १७०, १७२, १७३)** या'नी वोह फ़ज़ीलत जो र-मज़ानुल मुबारक में रोज़ा रखने की थी अब किसी तरह नहीं पा सकता।

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 985 मुलख़ब़सन)

उलटे लटके हुए लोग : जो लोग रोज़ा रख कर बिगैर किसी सहीह मजबूरी के तोड़ डालते हैं वोह अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के क़हरो ग़ज़ब से ख़ूब डरें। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहली



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : बरोज़े कियामत लोगों में से मेरे करीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

ﷺ को येह फ़रमाते हैं, मैं ने सरकारे मदीना, साहिबे मुअत्तर पसीना ﷺ को येह फ़रमाते सुना : “मैं सोया हुवा था तो ख़्वाब में दो शख्स मेरे पास आए और मुझे एक दुश्वार गुज़ार पहाड़ पर ले गए, जब मैं पहाड़ के दरमियानी हिस्से पर पहुंचा तो वहां बड़ी सख़्त आवाज़ें आ रही थीं, मैं ने कहा : “येह कैसी आवाज़ें हैं ?” तो मुझे बताया गया कि येह जहन्नमियों की आवाज़ें हैं। फिर मुझे और आगे ले जाया गया तो मैं कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रा कि उन को उन के टख़्नों की रगों में बांध कर (उलटा) लटकाया गया था और उन लोगों के जबड़े फाड़ दिये गए थे जिन से ख़ून बह रहा था, तो मैं ने पूछा : “येह कौन लोग हैं ?” तो मुझे बताया गया कि “येह लोग रोज़ा इफ़तार करते थे क़ब्ल इस के कि रोज़ा इफ़तार करना हलाल हो।”

(الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ج ٩ ص ٢٨٦ حديث ٧٤٤٨)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! र-मज़ान का रोज़ा बिला इजाज़ते शर-ई तोड़ देना बहुत बड़ा गुनाह है। वक़्त से पहले इफ़तार करने से मुराद येह है कि रोज़ा तो रख लिया मगर सूरज गुरूब होने से पहले पहले जान बूझ कर किसी सहीह मजबूरी के बिगैर तोड़ डाला। इस हदीसे पाक में जो अज़ाब बयान किया गया है वोह रोज़ा रख कर तोड़ देने वाले के लिये है और जो बिला उज़्रे शर-ई रोज़ाए र-मज़ान तर्क कर देता है वोह भी सख़्त गुनहगार और अज़ाबे नार का हक़दार है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे हबीब ﷺ के तुफ़ैल हमें अपने क़हरो ग़ज़ब से बचाए।

اٰمِيْنَ بِجَاۤءِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तीन बद बख़्त : हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है, ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा ﷺ का फ़रमाने बा करीना है : “जिस ने माहे र-मज़ान को पाया और उस के रोज़े न रखे वोह शख्स शकी (या’नी बद बख़्त) है, जिस ने अपने वालिदैन् या किसी एक को पाया और उन के साथ अच्छा सुलूक न किया वोह भी शकी (या’नी बद बख़्त) है और जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद न पढ़ा वोह भी शकी (या’नी बद बख़्त) है।”

(مُعْجَم اَوْسَط ج ٢ ص ٦٢ حديث ٣٨٧١)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियाँ लिखता है। (तर्मिज़ी)

नाक मिट्टी में मिल जाए : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, रसूलुल्लाह

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फरमाया : “उस शख्स की नाक मिट्टी में मिल जाए कि जिस के पास मेरा ज़िक्र किया गया तो उस ने मेरे ऊपर दुरुद नहीं पढ़ा और उस शख्स की नाक मिट्टी में मिल जाए जिस पर र-मज़ान का महीना दाख़िल हुवा फिर उस की मरिफ़रत होने से क़ब्ल गुज़र गया और उस आदमी की नाक मिट्टी में मिल जाए कि जिस के पास उस के वालिदैन् ने बुढ़ापे को पा लिया और उस के वालिदैन् ने उस को जन्नत में दाख़िल नहीं किया।” (या'नी बूढ़े मां बाप की ख़िदमत कर के जन्नत हासिल न कर सका)

(مسند احمد ج 3 ص 61 حديث 7400)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

रोज़े के तीन द-रजे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रोज़े की अगर्चे ज़ाहिरी शर्त येही है कि रोज़ादार क़स्दन खाने पीने और जिमाअ से बाज़ रहे। ताहम रोज़े के कुछ बातिनी आदाब भी हैं जिन का जानना ज़रूरी है ताकि हकीकी मा'नों में हम रोज़े की ब-र-कतें हासिल कर सकें। चुनान्वे रोज़े के तीन द-रजे हैं :

(1) अ़वाम का रोज़ा (2) ख़वास का रोज़ा (3) अख़स्सुल ख़वास का रोज़ा

(1) अ़वाम का रोज़ा : रोज़े के लुग़वी मा'ना हैं : “रुकना” लिहाज़ा शरीअत की इस्तिलाह में सुब्हे सादिक़ से ले कर गुरुबे आफ़ताब तक क़स्दन खाने पीने और जिमाअ से “रुके रहने” को रोज़ा कहते हैं और येही अ़वाम या'नी आम लोगों का रोज़ा है।

(2) ख़वास का रोज़ा : खाने पीने और जिमाअ से रुके रहने के साथ साथ जिस्म के तमाम आ'ज़ा को बुराइयों से “रोकना” ख़वास या'नी ख़ास लोगों का रोज़ा है।

(3) अख़स्सुल ख़वास का रोज़ा : अपने आप को तमाम तर उमूर से “रोक” कर सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ मु-तवज्जेह होना, येह अख़स्सुल ख़वास या'नी ख़ासुल ख़ास लोगों का रोज़ा है।

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 966 मुलख़ब्रसन)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रूरत इस अम्र की है कि खाने पीने वगैरा से “रुके रहने” के साथ साथ अपने तमाम तर आ'ज़ाए बदन को भी रोज़े का पाबन्द बनाया जाए।

